प्राकृत भारती पुष्प २८१

सिंघी जैन ग्रन्थमाला [ग्रन्थांक 10]
संस्थापक
श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी
संरक्षक
श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

जिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

नव-संस्करण

प्रधान सम्पादक तथा संचालक
आचार्य जिनविजयमुनि

[पुनर्प्रकाशन]
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
श्रीमती अंगूरी सिंघी

प्रकाशकः

देवेन्द्रराज मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक,
प्राकृत भारती अकादमी
13-ए, मेन मालवीय नगर,
जयपुर-302017
दूरभाष : 0141- 2524827

श्रीमती अंगूरी सिंघी
18, कापसहेड़ा एस्टेट,
नई दिल्ली - 110 037

प्रथम नव-संस्करण 2010

मूल्य : 400/- रुपये

US $ 16.00

© प्रकाशकाधीन

ISBN NO. 9978-81-89698-89-8

लेजर टाइप सेटिंग
प्राकृत भारती अकादमी

मुद्रकः
राज प्रिन्टर्स, जयपुर
फोन नं. 0141-2621774

सिंघी जैन ग्रन्थमाला/आचार्य जिन विजयमुनि/2010

This book is printed on Eco-friendly paper.

प्रकाशकीय

जैन धर्म में साहित्य सर्जन व संरक्षण की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और इसमें श्रमण वर्ग व श्रावक वर्ग दोनों का सम्मिलित और समर्पित योगदान रहा है। यही कारण है कि जैनों के पास हस्तलिखित ग्रन्थों का विशाल भण्डार उपलब्ध है। उदाहरण स्वरूप जिनभद्रसूरि का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने अनेक ज्ञानभण्डार स्थापित करने के पश्चात् जैसलमेर का प्रसिद्ध ज्ञानभण्डार स्थापित किया— जिसमें अनेक जैनेतर ग्रन्थों की प्राचीनतम ताडपत्रीय पाण्डुलिपियाँ भी संरक्षित हैं।

प्राच्य विद्या के मूर्धन्य मनीषी मुनिश्री जिनविजयजी ने इस प्राचीन धरोहर में से श्रेष्ठ ग्रन्थ रत्नों को आधुनिक शास्त्रीय पद्धति से संशोधित संपादित कर प्रकाशित करने की योजना पिछली सदी के तीसरे दशक में बनाई थी। इस योजना को कलकत्ता जैन समाज के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित मुखिया बाबू बहादुर सिंहजी सिंघी का उदार सहयोग प्राप्त हुआ। इसी कार्य को सुचारु रूप से संपन्न करने हेतु उन्होंने अपने पिता श्री डालचंदजी सिंघी की स्मृति में उनके गोत्र-नाम से '**सिंघी जैन ग्रन्थमाला**' की स्थापना करवाई। कालान्तर में यह योजना श्री क. मा. मुंशी द्वारा स्थापित भारतीय विद्या भवन के अन्तर्गत आ गई।

१९४४ में श्री बहादुर सिंहजी सिंघी के देहावसान से योजना के कार्य-कलापों में तनिक ठहराव आया किन्तु उनके योग्य सुपुत्रों ने, अपने पिताश्री की भावनाओं का आदर करते हुए, समुचित सहयोग में बाधा नहीं आने दी। यह कार्य मुनिश्री जिनविजयजी के जीवन काल तक निरन्तर चलता रहा। समर्पित व्यक्तियों के चले जाने के बाद ऐसी योजनाओं का भी अन्त हो जाता है। मुनिजी व मुंशीजी के चले जाने के बाद इस महत्त्वपूर्ण योजना पर भी विराम लग गया। किन्तु तब तक साठ से अधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका था और यह ग्रंथमाला जैन विद्या के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुकी थी।

गत ३०-४० वर्षों में शोधार्थी विद्वद् वर्ग को इस ग्रन्थमाला के ग्रन्थों का अभाव रह-रह कर खटकता रहा है? सभी ग्रन्थ अप्राप्य हो गए हैं और अनेक ग्रन्थ तो सुव्यवस्थित पुस्तकालयों में भी उपलब्ध नहीं होते। इस कमी को देखते हुए प्राकृत भारती अकादमी ने इस ग्रन्थमाला के पुन: प्रकाशन की योजना बनाई। यह कार्य कष्ट साध्य होने के साथ-साथ प्रचुर आर्थिक संसाधनों पर निर्भर करने वाला था अत: योजना के क्रियान्वन में विलम्ब होता रहा। तभी संयोगवश इस योजना के संबंध में सिंघी परिवार के ही श्री रंजन सिंघी (सुपुत्र बाबू नरेन्द्र सिंह सिंघी, सुपौत्र बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी) से चर्चा हुई। उन्होंने इस पुनर्प्रकाशन योजना की सराहना की और सहर्ष संपूर्ण आर्थिक भार वहन करने की स्वीकृति प्रदान की। हम आदरणीय रंजन सिंघी व समस्त सिंघी परिवार के इस साहित्य एवं संस्कृति प्रेम की सराहना करते हैं और इस अनुकरणीय सहयोग हेतु आभार प्रकट करते हैं।

जैसा कि ग्रन्थ के नाम से इंगित होता है, यह अनूठा ग्रन्थ पुरातन और रचनाकाल में विद्यमान प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थलों की निर्देशिका के रूप में संकलित है। विक्रम की १४वीं शताब्दी में रचित इस विविध तीर्थकल्प के ग्रन्थकार अपने समय के मूर्धन्य विद्वान् व प्रभावशाली आचार्य श्रीजिनप्रभसूरि थे। सूरिजी ने अपने समकालीन तुगलक सुलतान मुहम्मद शाह के दरबार में विशेष गौरव प्राप्त किया था। भारत के मुसलमान बादशाहों के दरबार में जैन धर्म का महत्त्व बताने वाले और उसका गौरव बढ़ाने वाले संभवत: ये सर्वप्रथम आचार्य थे। भ्रमण तो जैन साधु की चर्या का आवश्यक अंग है पर इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट रूप से लगता है कि श्री जिनप्रभसूरि को इतिहास और ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण में विशेष रूचि थी। उसी के परिणामस्वरूप अपनी यात्राओं के दौरान सभी तीर्थस्थलों से सम्बद्ध ऐतिहासिक और भौगोलिक सूचनाएँ एकत्र कर उन्हें निर्देशिका के रूप में संक्षेप में संकलित कर इस ग्रन्थ की रचना की थी। मनीषी संपादक का मानना है कि 'जैन साहित्य में ही नहीं समग्र भारतीय साहित्य में भी इस प्रकार का कोई ग्रन्थ अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है।' इस ग्रन्थ माला की पुनर्प्रकाशन शृंखला की चौथी कढ़ी के रूप में यह अनोखा और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। आशा है इसका भी मनीषी समुदाय में स्वागत होगा।

प्रकाशन से जुडे सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद।

देवेन्द्रराज मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

(IV)

सिं घी जै न ग्र न्थ मा ला

॥ ग्रन्थांक १० ॥

जिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

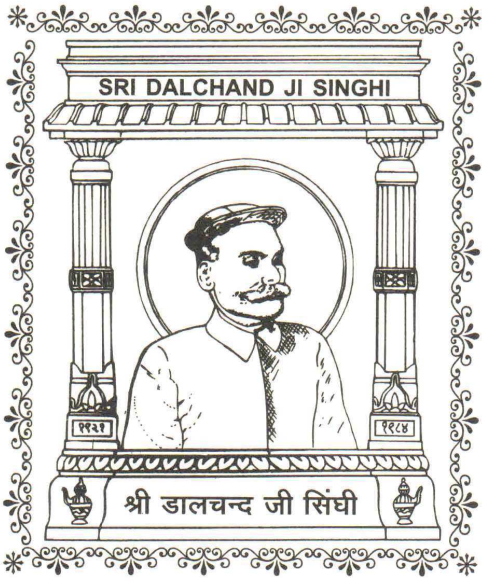

वि श्व भा र ती

सिंघी जैन ज्ञानपीठ

शान्तिनिकेतन

मूल्य, रु. ४-४-०]   [विक्रमाब्द १९९१

(V)

(VI) = empty book page

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

卐 ॥ ग्रन्थाङ्क १० ॥ 卐

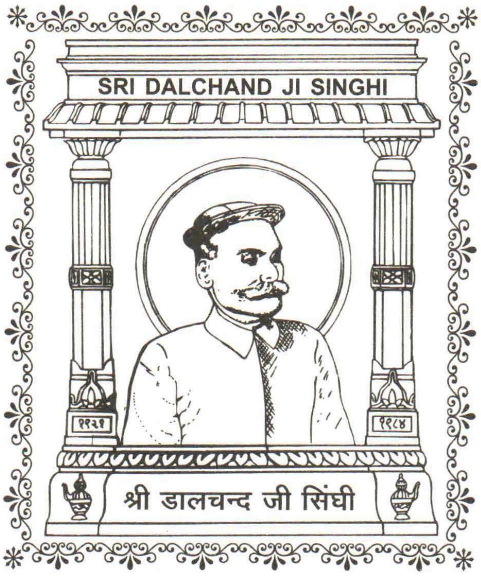

श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

(VII)

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
बहु उपयुक्त पुरातनवाङ्मय तथा नवीन संशोधनात्मक
साहित्यप्रकाशिनी जैन ग्रन्थावलि ।

कलकत्तानिवासी स्वर्गीय **श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी** की पुण्यस्मृतिनिमित्त
तत्सुपुत्र **श्रीमान् बहादुरसिंहजी सिंघी** द्वारा संस्थापित

मुख्य सम्पादक

जिन विजय

अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ, शान्तिनिकेतन
सम्मान्य सभासद-भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर पूना, और गूजरात साहित्यसभा अहमदाबाद;
भूतपूर्वाचार्य-गूजरात पुरातत्त्वमन्दिर अहमदाबाद; तथा अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, पाली,
प्राचीनगूर्जर आदि ग्रंथ संशोधक और सम्पादक ।

ग्रन्थांक १०

प्राप्तिस्थान
संचालक, सिंघी जैन ग्रन्थमाला.
शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

स्थापनाब्द] सर्वाधिकार संरक्षित. [वि० सं० १९८६

(VIII)

श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

भिन्न भिन्न पाठभेद और विशेषनामानुक्रम समन्वित मूल ग्रन्थ; सरल और सारगर्भित
हिन्दी भाषान्तर; ऐतिहासिक और भौगोलिक वस्तु विवेचक अनेकानेक
टिप्पनियों द्वारा सुविवेचित; तथा सुविस्तृत प्रस्तावना समलङ्कृत

सम्पादक
जिन विजय
जैन वाङ्मयाध्यापक, विश्वभारती.
शान्तिनिकेतन

प्रथम भाग

विविधपाठान्तर-विशेषनामानुक्रमादियुक्त मूलग्रन्थ

प्रकाशक
अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ.
शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

विक्रमाब्द १९९०]   प्रथमावृत्ति, एक सहस्र प्रतिः   [१९३४ क्रिष्टाब्द

(IX)

SINGHI JAINA SERIES

A COLLECTION OF CRITICAL EDITIONS OF MOST IMPORTANT CANONICAL, PHILOSOPHICAL, HISTORICAL, LITERARY, NARRATIVE ETC. WORKS OF JAINA LITERATURE IN PRĀKRIT, SANSKRIT, APABHRAṂŚA AND OLD VERNACULAR LANGUAGES, AND STUDIES BY COMPETENT RESEARCH SCHOLARS.

FOUNDED
BY

ŚRĪMĀN BAHĀDUR SIṄGHJĪ SIṄGHĪ OF CALCUTTA

IN MEMORY OF HIS LATE FATHER

ŚRĪ DĀLCANDJĪ SIṄGHĪ.

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA

ADHIṢṬHĀTĀ: SIṄGHĪ JAINA JÑĀNAPĪṬHA, ŚĀNTINIKETAN.

HONORARY MEMBER OF THE BHANDARKAR ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE OF POONA AND GUJRAT SAHITYA SABHA OF AHMEDABAD; FORMERLY PRINCIPAL OF GUJRAT PURATATTVAMANDIR OF AHMEDABAD; EDITOR OF MANY SANSKRIT, PRAKRIT, PALI, APABHRAMSHA, AND OLD-GUJRATI WORKS.

NUMBER 10

TO BE HAD FROM

SAÑCĀLAKA, SIṄGHĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

Founded] *All rights reserved* [1931. A. D.

(X)

VIVIDHA TĪRTHA KALPA

OF

JINAPRABHA SŪRI

CRITICALLY EDITED IN THE ORIGINAL SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS; HINDI TRANSLATION, NOTES AND ELABORATE INTRODUCTION ETC.

BY

JINA VIJAYA

SIṄGHI PROFESSOR OF JAINA CULTURE AT VIS'VABHĀRATĪ

ŚĀNTINIKETAN.

PART I

TEXT IN SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS, AND AN ALPHABETICAL INDEX OF ALL PROPER NAMES.

PUBLISHED BY

THE ADHISṬHĀTĀ, SIṄGHĪ JAINA JÑĀNAPĪṬHA

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

V. E. 1990] *First edition, One Thousand Copies.* [1934 A. D.

(XI)

॥ सिंघीजैनग्रन्थमालासंस्थापकप्रशस्तिः ॥

अस्ति बङ्गाभिधे देशे सुप्रसिद्धा मनोरमा । मुर्शिदाबाद इत्याख्या पुरी वैभवशालिनी ॥
निवसन्त्यनेके तत्र जैना ऊकेशवंशजाः । धनाढ्या नृपसदृशा धर्मकर्मपरायणाः ॥
श्रीडालचन्द इत्यासीत् तेष्वेको बहुभाग्यवान् । साधुवत् सच्चरित्रो यः सिंघीकुलप्रभाकरः ॥
बाल्य एवागतो यो हि कर्तुं व्यापारविस्तृतिम् । कलिकातामहापुर्यां धृतधर्मार्थनिश्चयः ॥
कुशाग्रया स्वबुद्ध्यैव सद्वृत्त्या च सुनिष्ठया । उपार्ज्य विपुलां लक्ष्मीं जातो कोट्यधिपो हि सः ॥
तस्य मन्नुकुमारीति सन्नारीकुलमण्डना । पतिव्रता प्रिया जाता शीलसौभाग्यभूषणा ॥
श्रीबहादुरसिंहाख्यः सद्गुणी सुपुत्रस्तयोः । अस्त्येष सुकृती दानी धर्मप्रियो धियांनिधिः ॥
प्राप्ता पुण्यवताऽनेन प्रिया तिलकसुन्दरी । यस्याः सौभाग्यदीपेन प्रदीप्तं यद्गृहाङ्गणम् ॥
श्रीमान् राजेन्द्रसिंहोऽस्ति ज्येष्ठपुत्रः सुशिक्षितः । यः सर्वकार्यदक्षत्वात् बाहुर्यस्य हि दक्षिणः ॥
नरेन्द्रसिंह इत्याख्यस्तेजस्वी मध्यमः सुतः । सूनुर्वीरेन्द्रसिंहश्च कनिष्ठः सौम्यदर्शनः ॥
सन्ति त्रयोऽपि सत्पुत्रा आप्तभक्तिपरायणाः । विनीताः सरला भव्याः पितुर्मार्गानुगामिनः ॥
अन्येऽपि बहवश्चास्य सन्ति स्वस्रादिबान्धवाः । धनैर्जनैः समृद्धोऽयं ततो राजेव राजते ॥

—अन्यच्च—

सरस्वत्यां सदासक्तो भूत्वा लक्ष्मीप्रियोऽप्ययम् । तत्राप्येष सदाचारी तच्चित्रं विदुषां खलु ॥
न गर्वो नाप्यहंकारो न विलासो न दुष्कृतिः । दृश्यतेऽस्य गृहे क्वापि सतां तद् विस्मयास्पदम् ॥
भक्तो गुरुजनानां यो विनीतः सज्जनान् प्रति । बन्धुजनेऽनुरक्तोऽस्ति प्रीतः पोष्यगणेष्वपि ॥
देश-कालस्थितिज्ञोऽयं विद्या-विज्ञानपूजकः । इतिहासादिसाहित्य-संस्कृति-सत्कलाप्रियः ॥
समुन्नत्यै समाजस्य धर्मस्योत्कर्षहेतवे । प्रचारार्थं सुशिक्षाया व्ययत्येष धनं घनम् ॥
गत्वा सभा-समित्यादौ भूत्वाऽध्यक्षपदाङ्कितः । दत्त्वा दानं यथायोग्यं प्रोत्साहयति कर्मठान् ॥
एवं धनेन देहेन ज्ञानेन शुभनिष्ठया । करोत्ययं यथाशक्ति सत्कर्माणि सदाशयः ॥
अथान्यदा प्रसङ्गेन स्वपितुः स्मृतिहेतवे । कर्तुं किञ्चिद् विशिष्टं यः कार्यं मनस्यचिन्तयत् ॥
पूज्यः पिता सदैवासीत् सम्यग्-ज्ञानरुचिः परम् । तस्मात्तज्ज्ञानवृद्ध्यर्थं यतनीयं मया वरम् ॥
विचार्यैवं स्वयं चित्ते पुनः प्राप्य सुसम्मतिम् । श्रद्धास्पदस्वमित्राणां विदुषां चापि तादृशाम् ॥
जैनज्ञानप्रसारार्थं स्थाने शान्तिनिकेतने । सिंघीपदाङ्कितं जैनज्ञानपीठमतीष्ठिपत् ॥
श्रीजिनविजयो विज्ञो तस्याधिष्ठातृसत्पदम् । स्वीकर्तुं प्रार्थितोऽनेन शास्त्रोद्धाराभिलाषिणा ॥
अस्य सौजन्य-सौहार्द-स्थैर्यौदार्यादिसद्गुणैः । वशीभूयाति मुदा येन स्वीकृतं तत्पदं वरम् ॥
तस्यैव प्रेरणां प्राप्य श्रीसिंघीकुलकेतुना । स्वपितृश्रेयसे चैषा ग्रन्थमाला प्रकाश्यते ॥
विद्वज्जनकृताल्हादा सच्चिदानन्ददा सदा । चिरं नन्दत्वियं लोके जिनविजयभारती ॥

(XII)

विविधतीर्थकल्पसूचिः–सङ्ग्रहानुक्रमेण ।

१ शत्रुञ्जयतीर्थकल्प .... पृ० १
२ रैवतकगिरिकल्पसंक्षेप ६
३ उज्जयन्तस्तव ७
४ उज्जयन्तमहातीर्थकल्प ८
५ रैवतकगिरिकल्प ९
६ पार्श्वनाथकल्प ११
— स्तम्भनककल्प १३
७ अहिच्छत्रानगरीकल्प १४
८ अर्बुदाद्रिकल्प १५
९ मथुरापुरीकल्प १७
१० अश्वावबोधतीर्थकल्प २०
११ वैभारगिरिकल्प २२
१२ कौशाम्बीनगरीकल्प २३
१३ अयोध्यानगरीकल्प २४
१४ अपापापुरी [संक्षिप्त] कल्प २५
१५ कलिकुंड-कुर्कुटेश्वरकल्प २६
१६ हस्तिनापुरकल्प २७
१७ सत्यपुरतीर्थकल्प २८
१८ अष्टापदमहातीर्थकल्प [१] ३१
१९ मिथिलातीर्थकल्प ३२
२० रत्नवाहपुरकल्प ३३
२१ अपापाबृहत्कल्प ३४
२२ कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प ४५
२३ प्रतिष्ठानपत्तनकल्प [१] ४७
२४ नन्दीश्वरद्वीपकल्प ४८
२५ काम्पिल्यपुरतीर्थकल्प ५०
२६ अणहिलपुरस्थितअरिष्ठनेमिकल्प ५१
२७ शंखपुरपार्श्वकल्प ५२
२८ नासिक्यपुरकल्प ५३
२९ हरिकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्प ५५
३० कपर्दियक्षकल्प ५६
३१ शुद्धदन्तीस्थितपार्श्वनाथकल्प ५७
३२ अवन्तिदेशस्थ-अभिनन्दनदेवकल्प ५७
३३ प्रतिष्ठानपुरकल्प [२] ५९
३४ प्रतिष्ठानपुराधिपतिसातवाहननृपचरित्र ६१
३५ चम्पापुरीकल्प ६५
३६ पाटलिपुत्रनगरकल्प ६७
३७ श्रावस्तीनगरीकल्प ७०
३८ वाराणसीनगरीकल्प ७२
३९ महावीरगणधरकल्प ७५
४० कोकावसतिपार्श्वनाथकल्प ७७
४१ कोटिशिलातीर्थकल्प ७८
४२ वस्तुपाल-तेजःपालमन्त्रिकल्प ७९
४३ ढींपुरीतीर्थकल्प ८१
४४ ढींपुरीस्तव ८४
४५ चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्प ८५
४६ समवसरणरचनाकल्प ८७
४७ कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्प.... .... ८८
४८ व्याघ्रीकल्प ९०
४९ अष्टापदगिरिकल्प [२] ९१
५० हस्तिनापुरतीर्थस्तवन ९४
५१ कन्यानयमहावीरकल्पपरिशेष ९५
५२ कुल्यपाकस्थऋषभदेवस्तुति ९७
५३ आमरकुण्ड पद्मावतीदेवीकल्प ९८
५४ चतुर्विंशतिजिनकल्याणककल्प ९९
५५ तीर्थकरातिशयविचार ९९
५६ पञ्चकल्याणक स्तवन १००
५७ कोल्लपाकमाणिक्यदेवतीर्थकल्प १०१
५८ श्रीपुर-अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प १०२
५९ स्तम्भनककल्पशिलोञ्छ १०४
६० फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्प १०५
६१ अम्बिकादेवीकल्प १०७
६२ पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्प १०८
६३ ग्रन्थसमाप्तिकथन १०९
A. D. P. प्रतिगतपुष्पिकालेख ११०
A. सञ्ज्ञकादर्शप्रान्तस्थितकल्पानुक्रमणिका.

(XIII)

विविधतीर्थकल्पसूचिः—अकाराद्यनुक्रमेण ।

		कल्पांक	पत्रांक
१	अणहिलपुरस्थित अरिष्टनेमिकल्प	[२६]....	५१
२	अपापापुरी (संक्षिप्त) कल्प	[१४]....	२५
३	अपापाबृहत्कल्प	[२१]....	३४
४	अयोध्यानगरीकल्प	[१३]....	२४
५	अर्बुदाद्रिकल्प	[८]....	१५
६	अवन्तिदेशस्थ अभिनन्दनदेवकल्प	[३२]....	५७
७	अश्वावबोधकल्प	[१०]....	२०
८	अष्टापदमहातीर्थकल्प १	[१८]....	३१
९	अष्टापदगिरिकल्प २	[४९]....	९१
१०	अहिच्छत्रानगरीकल्प	[७]....	१४
११	आमरकुंडपद्मावतीदेवीकल्प	[५३]....	९८
१२	अम्बिकादेवीकल्प	[६१]....	१०७
१३	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प	[४]....	८
१४	उज्जयन्तस्तव	[३]....	७
१५	कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प	[२२]....	४५
१६	,, ,, कल्पपरिशेष	[५१]....	९५
१७	कपर्दियक्षकल्प	[३०]....	५६
१८	कलिकुंड-कुर्कुटेश्वरकल्प	[१५]....	२६
१९	काम्पिल्यपुरतीर्थकल्प	[२५]....	५०
२०	कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्प	[४७]....	८८
२१	कुल्यपाकस्थऋषभदेवस्तुति	[५२]....	९७
२२	कोकावसतिपार्श्वनाथकल्प	[४०]....	७७
२३	कोटिशिलातीर्थकल्प	[४१]....	७८
२४	कोल्लपाकमाणिक्यदेवतीर्थकल्प	[५७]....	१०१
२५	कौशाम्बीनगरीकल्प	[१२]....	२३
२६	चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्प	[४५]....	८६
२७	चतुर्विंशतिजिनकल्याणककल्प	[५४]....	९९
२८	चम्पापुरीकल्प	[३५]....	६५
२९	ढींपुरीतीर्थकल्प	[४३]....	८१
३०	ढींपुरीस्तव	[४४]....	८४
३१	तीर्थकरातिशयविचार	[५५]....	९९
३२	नन्दीश्वरद्वीपकल्प	[२४]....	४८
३३	नासिक्यपुरकल्प	[२८]....	५३
३४	पाटलिपुत्रनगरकल्प	[३६]....	६७
३५	पार्श्वनाथकल्प	[६]....	११
	,, स्तम्भनककल्प	....	१३
३६	पञ्चकल्याणकस्तवन	[५६]....	१००
३७	पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्प	[६२]....	१०८
३८	प्रतिष्ठानपत्तनकल्प १	[२३]....	४७
३९	,, पुरकल्प २	[३३]....	५९
४०	,, पुराधिपतिसातवाहननृप चरित्र	[३४]....	६१
४१	फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्प	[६०]....	१०५
४२	मथुरापुरीकल्प	[९]....	१७
४३	महावीरगणधरकल्प	[३९]....	७५
४४	मिथिलातीर्थकल्प	[१९]....	३२
४५	रत्नवाहपुरकल्प	[२०]....	३३
४६	रैवतकगिरिकल्पसंक्षेप	[२]....	६
४७	,, (द्वितीय)	[५]....	९
४८	वस्तुपाल-तेजःपालमंत्रिकल्प	[४२]....	७९
४९	वाराणसीनगरीकल्प	[३८]....	७२
५०	वैभारगिरिकल्प	[११]....	२२
५१	व्याघ्रीकल्प	[४८]....	९०
५२	शंखपुरपार्श्वकल्प	[२७]....	५२
५३	शत्रुञ्जयतीर्थकल्प	[१]....	१
५४	शुद्धदन्तीस्थितपार्श्वनाथकल्प	[३१]....	५७
५५	श्रावस्तीनगरीकल्प	[३७]....	७०
५६	श्रीपुरअन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प	[५८]....	१०२
५७	सत्यपुरतीर्थकल्प	[१७]....	२८
५८	समवसरणरचनाकल्प	[४६]....	८७
५९	स्तम्भनककल्पशिलोञ्छ	[५९]....	१०४
६०	हरिकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्प	[२९]....	५५
६१	हस्तिनापुरकल्प	[१६]....	२७
६२	,, तीर्थस्तवन	[५०]....	९४

(XIV)